अध्याय 11

अंतिम विपत्ति की घोषणा: पहलौठों की मृत्यु

निर्गमन 11 इस्राएल के दासत्व के अन्त होने के आरंभ का बयान करता है। दसवीं और अंतिम विपत्ति की भविष्यवाणी, पहलौठों की मृत्यु, प्रस्तुत की गई है।

यहोवा ने मूसा से कहा कि यह घोषणा कर कि वह मिस्र पर एक और विपत्ति लाने वाला है, जिसके बाद फ़िरौन इस्राएलियों को जाने देगा (11:1)। फिर उसने इस्राएलियों से कहा कि जाने से पहले वे अपने पड़ोसियों से उपहार माँग लें (11:2)। लेखक ने जोड़ा कि सामान्यतः इस्राएली और विशेषतः मूसा, मिस्रियों में अति महान थे (11:3)।

आयत 4 से 7 तक, दृश्य फिर से वापस फ़िरौन के दरबार को चला जाता है। मूसा ने फ़िरौन से कहा कि यहोवा, इस्राएलियों को छोड़ कर, मिस्र के सभी पहलौठों को मार देगा। परिणामस्वरूप, इस्राएलियों से देश से निकल जाने को कहा जाएगा। इस अंतिम विपत्ति की घोषणा करने के बाद, मूसा "बड़े क्रोध में" फ़िरौन के पास से निकल गया (11:8)।

इस अध्याय का विपत्तियों के बारे में दो कथनों के साथ अन्त होता है: पहला, यहोवा ने मूसा से कह दिया कि विपत्तियों के होने पर भी फ़िरौन तुम्हारी न सुनेगा। दूसरा, पाठक को स्मरण कराया गया है कि फ़िरौन अपने कठोर मन के कारण लगातार मानने से इनकार करता रहा (11:10)।

यहोवा की मूसा को सूचना (11:1-3)

1फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "एक और विपत्ति मैं फ़िरौन और मिस्र देश पर डालता हूं, उसके पश्चात वह तुम लोगों को वहां से जाने देगा; और जब वह जाने देगा तब तुम सभों को निश्चय निकाल देगा। 2मेरी प्रजा को मेरी यह आज्ञा सुना, कि एक एक पुरुष अपने अपने पड़ोसी, और एक एक स्त्री अपनी अपनी पड़ोसिन से सोने चांदी के गहने मांग ले।" 3तब यहोवा ने मिस्रियों को अपनी प्रजा पर दयालु किया। इसके अतिरिक्त वह पुरुष मूसा, मिस्र देश में फ़िरौन के कर्मचारियों और साधारण लोगों की दृष्टि में अति महान था।

पिछले अध्याय के उपसंहार के संदर्भ में, जिसमें फ़िरौन और मूसा ने घोषणा

की थी कि वे एक दूसरे को फिर नहीं देखेंगे (10:28, 29), बहुत से व्याख्याकर्ताओं ने 11:1-3 की व्याख्या के लिए उसे निक्षिप्त पद माना है।[1] फ़िरौन से, 10:24-29 और 11:4-8 में दर्ज, सामना होने के कुछ समय पहले, यहोवा ने मूसा से बात की और उससे कहा कि एक अंतिम विपत्ति की घोषणा करे। आयत 1 की प्रारंभिक पंक्ति का अनुवाद ऐसे भी किया जा सकता है, "अब यहोवा ने मूसा से कह रखा था" (NIV)।[2] उमबर्टो कस्सुटो का सुझाव था कि, फ़िरौन से यह वार्तालाप होने के समय, मूसा को 11:1-3 का सन्देश स्मरण आया, एक ऐसा सन्देश जो पहले से यहोवा द्वारा दिया गया था।[3]

लेखक वृतांत में इस बिंदु पर आकर ऐसे लघु-कोष्टक को क्यों डालना चाहेगा? यहोवा का पहले से दिया गया दर्शन मूसा द्वारा 11:4-8 की घोषणा को स्पष्ट करता है। बिना 11:1-3 के, पाठक इस बात पर अचरज कर सकता था कि मूसा ने फ़िरौन को जो जानकारी दी वह उसने कहाँ से सुनी, मिस्रियों पर अंतिम प्रहार की घोषणा करने के विषय मूसा इतना निर्भीक क्यों था, या फ़िरौन ने मूसा का अन्त ही क्यों नहीं कर दिया यदि मूसा उसे इतना घृणास्पद लगता था। (ऐसा करना बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं होता क्योंकि "मूसा ... लोगों की दृष्टि में अति महान था।")

इसलिए आयत 1 से 3, आगे आने वाली बातों के लिए, पाठकों को यह बता कर कि यहोवा एक और विपत्ति भेजने की योजना रखता था, परिचय का कार्य करती है। फ़िरौन जब भी इस्राएलियों को जाने की अनुमति देता, मिस्री इस्राएलियों को अपने साथ ले जाने के लिए उदार भाव से उपहार देते।

आयत 1. इससे पहले के प्रकाशन में, **यहोवा ने मूसा** को **एक और विपत्ति** के बारे में बताया जो **फ़िरौन** को बाध्य करेगी कि वह इस्राएल को देश से निकलने की अनुमति दे। परमेश्वर के लोगों को केवल जाने की अनुमति ही नहीं मिलेगी, मिस्री उन्हें **निश्चय निकाल देंगे**। दूसरे शब्दों में, मिस्री इस्राएलियों से इतना पीछा छुड़ाना चाहेंगे कि वे उन्हें बलपूर्वक निकाल देंगे (देखें 6:1; 12:31-36)।

आयत 2. इसके बाद परमेश्वर ने मूसा से कहा कि इस्राएलियों से कहे कि वे अपने **पड़ोसियों से सोने चांदी के गहने मांग लें**। जब उसने मूसा को पहले-पहल बुलाया था तब उसने इसी बात की भविष्यवाणी की थी (3:22)। निर्गमन में बाद में, परमेश्वर की आज्ञा का पालन हुआ; इस्राएलियों ने माँगा, और मिस्रियों ने दिया (12:35, 36)। चांदी और सोने के गहनों के अतिरिक्त, इस्राएलियों ने वस्त्र भी माँगे (3:22; 12:35)।

अपने मिस्री पड़ोसियों से इन उपहारों को ले लेने के संदर्भ में नैतिकता के प्रश्न उठते हैं।[4] क्या जाते समय इस्राएलियों के लिए, यह जानते हुए कि वे जा रहे हैं और उन्हें वापस चुका नहीं पाएँगे, मिस्रियों से गहने "उधार माँगना" (KJV) नैतिक था? यद्यपि इब्रानी शब्द שָׁאַל *(शाल)* का अर्थ "उधार माँगना" हो सकता है (22:14 [13]), इस पारिभाषिक शब्द का इस संदर्भ में और अधिक अच्छा अनुवाद होता है "माँगना" (NASB; NKJV; NRSV; NIV)। कुछ इस पर भी चकित हो सकते हैं कि ऐसे उपहारों का मांगना भी क्या नैतिक था, इस तथ्य को

जानते हुए कि निर्गमन बाद में कहता है कि इस्राएलियों ने "मिस्रियों को लूट लिया" (12:36; देखें 3:22)। इन उपहारों को इस्राएलियों की लंबे समय की सेवा के भुगतान के रूप में भी देखा जा सकता है।

आयत 3. मिस्रियों ने इतनी सरलता से अपने इस्राएली पड़ोसियों को कैसे दे दिया? प्रतीत होता है कि उत्तर है कि वे उनसे पीछा छुड़ाना चाहते थे।[5] वे इस्राएलियों को उन विपत्तियों से जो उन्हें सहनी पड़ीं थीं, जोड़ कर देख रहे थे, और इस समस्या का समाधान हो जाने के लिए वे उपहार छोटी कीमत थे।

लेख स्पष्ट करता है कि मिस्री क्यों इतने उदार थे: **यहोवा ने मिस्रियों को अपनी प्रजा पर दयालु किया।** इस्राएलियों ने मिस्रियों से आदर नहीं कमाया, वरन उन्होंने इसे परमेश्वर से उपहार के रूप में प्राप्त किया - यह तथ्य 12:36 में दोहराया गया है। वास्तव में यह यहोवा ही था जो उन्हें "सोना चांदी दिला कर निकाल लाया" (भजन 105:37)।

इसके अतिरिक्त, **मूसा मिस्र देश में फ़िरौन के कर्मचारियों और साधारण लोगों की दृष्टि में अति महान था**। क्यों? संभवतः कुछ को उसका राजसी पालन-पोषण स्मरण था। अधिक संभावना है कि क्योंकि मिस्र को घुटने टेकने पर बाध्य करने के लिए यहोवा द्वारा प्रयुक्त मानवीय माध्यम वह ही था।

मूसा ने फ़िरौन को सूचित किया (11:4-8)

4फिर मूसा ने कहा, "यहोवा इस प्रकार कहता है: आधी रात के लगभग मैं मिस्र देश के बीच में होकर चलूँगा। 5तब मिस्र में सिंहासन पर विराजने वाले फ़िरौन से लेकर चक्की पीसनेवाली दासी तक के पहिलौठे; वरन् पशुओं तक के सब पहिलौठे मर जाएँगे। 6और सारे मिस्र देश में बड़ा हाहाकार मचेगा, यहाँ तक कि उसके समान न तो कभी हुआ और न होगा। 7पर इस्राएलियों के विरुद्ध, क्या मनुष्य क्या पशु, किसी पर कोई कुत्ता भी न भोंकेगा; जिससे तुम जान लो कि मिस्रियों और इस्राएलियों में मैं यहोवा अन्तर करता हूँ। 8तब तेरे ये सब कर्मचारी मेरे पास आ मुझे दण्डवत् करके यह कहेंगे, 'अपने सब अनुचरों समेत निकल जा।' और उसके पश्चात मैं निकल जाऊँगा।" यह कह कर मूसा बड़े क्रोध में फ़िरौन के पास से निकल गया।

संभवतः यह अनुच्छेद, जैसे पहले 10:24-29 में देखा गया था, में वर्णित दृश्य को जारी रखता है। मूसा ने, जैसा उसने पहले भी किया था, फ़िरौन को इस अंतिम विपत्ति के बारे में चेतावनी दी। इस विपत्ति की चेतावनी पहले के विपत्ति से अलग था, जिसमें मूसा ने "यदि शब्द" नहीं जोड़ा; उसने यह नहीं कहा, "*यदि* तू मेरे लोगों को नहीं जाने देगा तो विपत्ति आएगी।" बल्कि उसने पहले ही इस विपत्ति के होने की घोषणा कर दी थी: इस्राएलियों को मिस्र छोड़ना ही था!

आयत 4. अध्याय 10 यह कहते हुए समाप्त होता है, "तू ने ठीक कहा है; मैं तेरे मुँह को फिर कभी न देखूँगा!" (10:29)। इससे पहले कि मूसा फ़िरौन की

उपस्थिति से दूर चला जाता, उसने, भविष्यवक्ताओं द्वारा घोषणा में प्रयोग किए जाने वाक्यांश कि **“यहोवा यूँ कहता है,”** से अंतिम विपत्ति की घोषणा की। दूसरे शब्दों में यहोवा ही ने उसे यह संदेश दिया था।

विपत्तियों के बारे में ढेर सारे वृतांतों में, पाठ यह बताता है कि मूसा को इस संबंध में परमेश्वर का प्रकाशन मिला था, परंतु स्पष्ट रूप से मूसा द्वारा उस संदेश को फ़िरौन को देना साफ-साफ नहीं दिखता है, यद्यपि यह स्पष्ट है कि मूसा ने पूर्ण विश्वासयोग्यता के साथ राजा को परमेश्वर का संदेश दिया था। इस परिस्थिति में, पाठ में मूसा ने उस संदेश का संचरण, परमेश्वर के मूल प्रकाशन के बिना प्रस्तुत किया है। लेखक ने अनुमान लगाया है कि पाठक कहानी पढ़ते समय “रिक्त स्थानों की पूर्ति” स्वयं करेंगे।

यहाँ, मूसा ने विपत्ति को परमेश्वर की पूर्वावलोकन के रूप में प्रस्तुत किया है। उसने यह कहकर आरंभ किया कि यह कब होगा और कौन इसके जिम्मेदार होंगे: **“आधी रात के लगभग मैं मिस्र देश के बीच में होकर चलूँगा।”** जे. फिलिप ह्यात ने इस वृतांत को “विविध मानवरूपी बोली” कहा है, अर्थात परमेश्वर का एक ऐसा चित्र जिसका वर्णन मानवीय शब्दावली में किया गया है (देखें उत्पत्ति 3:8; 11:5; 18:22; निर्गमन 7:17; 8:19)।[6]

आयत **5.** आगे मूसा ने यह बताया कि विपत्ति किस प्रकृति की होगी: **“मिस्र के सभी पहलौठे मर जाएंगे।”** यह सत्यता कि सभी “पहलौठे” नर मर जाएंगे, ने दृश्य को भयानक बना दिया था। पहलौठे परिवार के सबसे महत्वपूर्ण सदस्य समझे जाते थे। पहलौठा पुत्र, पिता का प्रथम फल समझा जाता था (भजन 78:51; 105:36)। उसे अपने पिता की सम्पत्ति का “दोहरा भाग” मिलता था (व्यव. 21:17), और उससे यह अपेक्षा की जाती थी कि वह अपने परिवार के वंश को आगे बढ़ाए। फिर भी, परमेश्वर का मिस्र के पहलौठों को मारना उचित ठहराया जा सकता है क्योंकि मिस्र ने इस्राएलियों के पुत्रों को मारा था (1:22) और परमेश्वर के पहलौठे इस्राएल, के साथ दुर्व्यवहार किया था (4:23)। मिस्रियों के लिए पहलौठे पुत्रों की मृत्यु, जैसे को तैसा, जैसा दण्ड था।[7]

मूसा ने यह भी बताया कि कौन-कौन इससे प्रभावित होंगे: विपत्ति मिस्र के सभी पहलौठों को मार देगा। परमेश्वर इस कार्य में धन, सामाजिक प्रतिष्ठा, या शक्ति के आधार पर भेद भाव नहीं करेगा। यह विपत्ति मिस्र के महान व्यक्तियों को भी प्रभावित करेगा, यहाँ तक कि **मिस्र में सिंहासन पर विराजने वाले फ़िरौन** को भी नहीं छोड़ेगा। यद्यपि फ़िरौन, जो देवता माना जाता है, वह भी अपने पहलौठे पुत्र - मिस्र का राजकुमार, को बचाने में सामर्थहीन सिद्ध होगा।

इससे भी बढ़कर, यह विपत्ति निम्न स्तर के लोगों को भी प्रभावित करेगा, **चक्की पीसनेवाली दासी तक के पहिलौठे**। इसके समानान्तर अनुच्छेद में, निम्न स्तर के लोगों के अन्तर्गत “गड़हे में पड़े हुए बँधुए” को भी सम्मिलित किया गया है (12:29)। चक्की पीसना एक ऐसा निम्न कार्य था जो किसी दास या बँधुए के लिए ही हुआ करता था (न्यायियों 16:21; यशा. 47:2)। कार्ल जी. रासमुस्सेन के अनुसार “चक्की” दो पत्थर से बना होता था जो एक बड़े चट्टान “एक काला

ज्वालामुखी से निकला चट्टान" से काटकर बनाया जाता था। चक्की पीसने वाला/ली नीचे स्थिर पड़े पत्थर के पास घुटने के बल झुक कर बैठ जाता था जो सामान्यता चतुर्भुजाकार होता था और वह 15 अंश पर झुका होता था। इस पत्थर पर अनाज रखने के बाद वह उसे ऊपर वाले हल्के पत्थर से तेजी से घुमाकर पीसता था। परिणामस्वरूप, अनाज पीसकर ढाल से गिरते हुए ढेर के रूप में एकत्रित होता था।[8]

विनाशकारी विपत्ति से **पशुओं तक के सब पहलौठे** भी मारे जाएँगे। בְּהֵמָה *(बेहेमाह)*, शब्द बैलों एवं गायों को छोड़कर अन्य जानवरों के लिए भी प्रयोग किया गया है। निर्गमन की पुस्तक में इस इब्रानी शब्द को "जानवरों" के लिए प्रयोग किया गया है और अंतिम विपत्ति में इसका इसी प्रकार दो बार अनुवाद किया गया है (11:7; 12:12)।

आयत **6.** तब मूसा ने यह प्रकट किया कि लोगों की प्रतिक्रिया कैसी होगी: **"और सारे मिस्र देश में बड़ा हाहाकार मचेगा।"** इस प्रकार का भयानक, दुःख भरा, और दयनीय हाहाकार इससे पहले मिस्र में कभी नहीं सुना गया होगा (देखें 9:18, 24; 10:6, 14)।

आयत **7.** इस बात का वर्णन करने के बाद कि कौन-कौन इस विपत्ति से प्रभावित होंगे और इसके प्रति उनका प्रत्युत्तर कैसा होगा, मूसा ने यह भी लिखा कि कौन इस विपत्ति से प्रभावित नहीं होंगे। **इस्राएल के पुत्र** विपत्ति से प्रभावित नहीं होंगे ताकि मिस्री लोग देखें कि **यहोवा मिस्र और इस्राएल के बीच अन्तर करता है** (देखें 8:22, 23; 9:4)।

जब मूसा ने इस्राएल के बारे में कहा कि **इस्राएलियों के विरुद्ध, क्या मनुष्य क्या पशु, किसी पर कोई कुत्ता भी न भोंकेगा**, तो वह यह कह रहा था कि परमेश्वर के लोग किसी भी प्रकार के खतरे में नहीं हैं।[9] भौंकने वाला कुत्ता आमतौर पर खतरनाक नहीं होता है, परंतु इस्राएलियों को मामूली खतरा का भी सामना नहीं करना पड़ेगा। जॉन आई. दुरहैम के अनुसार, "इस्राएलियों को किसी भी प्रकार का नुकसान उठाना नहीं पड़ेगा और न ही वे व्यथित होंगे। कुत्तों का गुर्राना भी इस्राएलियों के उपनिवेश को अशांत नहीं करेगा, जबकि मिस्रियों के बीच वायुमण्डल चीख-पुकार से फट जाएगी।"[10] इस्राएल के लोगों को डरने की आवश्यकता नहीं थी, जबकि मिस्रियों में पहलौठों की मृत्यु, करूणनाद और डरावना दृश्य ला रहा था।

इब्रानी भाषा में "कोई कुत्ता भी नहीं भौंकेगा" का शाब्दिक अर्थ "एक कुत्ता अपनी जीभ भी तेज नहीं करेगा" (לֹא יֶחֱרַץ־כֶּלֶב לְשֹׁנוֹ, *लो येखेरेत्स केलेव लेसोनो)*। "जीभ भी तेज नहीं करेगा" कहावत की पृष्ठभूमि और अर्थ अस्पष्ट है, परंतु अन्य स्थान पर यह मानवजाति के संदर्भ में प्रयोग हुआ है (यहोशू 10:21)। दोनों स्थिति में, "जीभ तेज *नहीं* करना" का संदर्भ शांत रहना है। इस पाठ में KJV में इसका अनुवाद "जीभ नहीं हिलाना" किया गया है, जबकि NRSV में इसका अनुवाद नहीं "गुर्राएगा" किया गया है। विल्बर फील्ड्स ने सुझाया कि आयत 7 का अर्थ "[परमेश्वर] की सुरक्षा इतनी मजबूत होगी कि कुत्ता भी चलते-फिरते

इस्राएलियों और उनके पशुओं पर नहीं भौंकेगा।"[11]

आयत 8. अंततः, मूसा ने फ़िरौन को इस विपत्ति के बारे में बताया: **"तब तेरे ये सब कर्मचारी मेरे पास आ मुझे दण्डवत् करेंगे।"** फ़िरौन के कर्मचारी, जो अपने दिनचर्या के अधिकांश समय में फ़िरौन को दण्डवत् करते रहते थे, तो जब विपत्ति आएगी, तो वे मूसा के पास जाएंगे और उसको दण्डवत् करेंगे। विपत्ति का वृतांत, यहोवा और मिस्री देवी-देवताओं के बीच टकराव प्रस्तुत करता है, जो मुख्य रूप से फ़िरौन को दर्शाता है। इस अनुच्छेद में यहोवा की स्पष्ट विजय, भविष्यवाणी की गई है। यहाँ तक फ़िरौन के निकटतम कर्मचारी दण्डवत् करेंगे - फ़िरौन को नहीं, बल्कि यहोवा के राजदूत को!

जब फ़िरौन के कर्मचारी मूसा को दण्डवत् करेंगे, तब वे इस्राएलियों से **निकल जाने** का आग्रह करेंगे। इस पूरे अनुच्छेद का विषय "जाने दो" है। फ़िरौन ने मूसा को "चले जाने" के लिए कहा था (10:28)। तब मूसा ने कहा कि प्रभु मिस्र में "चलेगा" (11:4)। इसके बाद, फ़िरौन के कर्मचारियों ने इस्राएल को "जाने के लिए" कहा (11:8)। जब उन्होंने ऐसा किया तो मूसा ने कहा कि वह "चला जाएगा" और उसके पश्चात वह फ़िरौन की उपस्थिति से "चला गया" (11:8)।[12]

फ़िरौन का दरबार अचानक छोड़ते हुए मूसा ने **क्रोध में**, अपनी घोषणा उच्चारित की, यह वैसा ही क्रोध था जो फ़िरौन ने 10:28 में दिखाया था। אַף *(आफ)* का अनुवाद "नासिका छिद्र" भी किया जा सकता है। इस शब्द का अर्थ ऐसा इसलिए हुआ होगा क्योंकि जब कोई क्रोध करता है तो उसकी नाक भी भड़क उठती है।

सारांश वक्तव्य (11:9, 10)

9यहोवा ने मूसा से कह दिया था, "फ़िरौन तुम्हारी न सुनेगा; क्योंकि मेरी इच्छा है कि मिस्र देश में बहुत से चमत्कार करूँ।" 10मूसा और हारून ने फ़िरौन के सामने ये सब चमत्कार किए; पर यहोवा ने फ़िरौन का मन और कठोर कर दिया, इसलिये उसने इस्राएलियों को अपने देश से जाने न दिया।

इस समय लेखक ने अपने वृतांत में प्रथम नौ विपत्तियों की कहानी के लिए उसी तरह सारांश वक्तव्य लिखा जिस तरह उसने कहानी के आरंभ में, जो कुछ होने वाला था, के लिए परिचय लिखा था (7:1-5; देखें 3:18-22; 4:21-23)।

आयत 9. कुछ अनुवाद (NIV; NLT; CEV; NCV) स्पष्ट करते हैं कि यह आयत, 11:4-8 में बताई गई कहानी जारी नहीं रखता है। उदाहरण के लिए NLT कहता है, "अब यहोवा ने मूसा को पहले ही बता दिया था", इस ओर संकेत करता है कि विपत्ति से संबंधित जो बातें हुई उसे यहोवा ने आरंभ में ही बता दिया था।

आयत 10. जो यहोवा ने आयत 9 में कहा था, वह घट चुकी थी। **मूसा और हारून ने फ़िरौन के सामने ये सब चमत्कार किए।** "ये सब चमत्कार" में केवल प्रथम नौ विपत्ति ही सम्मिलित नहीं है, बल्कि वे सभी चमत्कार सम्मिलित हैं जिसे मूसा

और हारून ने फ़िरौन के सम्मुख दिखाए (7:9-13)। फिर भी, फ़िरौन ने जो कार्य पहले करने के लिए ठान लिया था, उसको पूरा करने में उत्साहित करने के द्वारा **यहोवा ने फ़िरौन के हृदय को कठोर कर दिया था।** जिसका परिणाम यह निकला कि फ़िरौन ने इस्राएलियों को मिस्र से नहीं जाने दिया। लेकिन दसवें विपत्ति ने कहानी के अंत को बदल डाला।

अतः अध्याय 11, परिवर्तनशील है। यह प्रथम नौ विपत्तियों के वृतांत को समाप्त करता है और अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण विपत्ति का परिचय देता है।

अनुप्रयोग

"अति महान" (11:3)

"तब यहोवा ने मिस्रियों को अपनी प्रजा इस्राएल पर दयालु किया," और "मूसा मिस्र देश में अति महान ठहरा" (11:3)। मूसा का यह सम्मान उस विपत्ति के साथ जोड़ा जा सकता है जिसके द्वारा यहोवा की सामर्थ प्रकट हुई थी और जिसने यह संकेत किया कि यहोवा का अनुग्रह उसके प्रजा के साथ है। लोग अब इस्राएलियों को उस तरह भय या सम्मान के साथ देखते थे जिस तरह युद्ध में हारे हुए लोग विजय प्राप्त करने वाले राष्ट्र को देखते थे। अभी, यह सम्मान हमें यह स्मरण दिलाता है कि किस प्रकार आदि कलीसिया से भी "सब लोग प्रसन्न थे" (प्रेरितों. 2:47)। आज, हम कलीसिया से बाहर के लोगों से सम्मान प्राप्त करने के लिए आश्चर्यकर्म पर निर्भर नहीं हो सकते हैं। इसके लिए हमें धर्मी जीवन जीने की आवश्यकता है (1 पतरस 2:12; 3:15, 16)। जब हम ऐसा करेंगे, तो हम, लोगों के समूह के रूप में, संभवतः हमारे समाज के लोग हमारा "सम्मान" करेंगे।

क्रोध में कोई भेदभाव नहीं होता है (11:5)

मिस्रियों का इस्राएल के साथ दुर्व्यवहार और उनके बच्चों को मारने के कारण, परमेश्वर ने उनके पहलौठों को मारने के लिए विपत्ति भेजी। अपना क्रोध उन पर उण्डेलने में परमेश्वर ने कोई भेदभाव नहीं दिखाया, उसने सभों के पहलौठों को घात किया - राजा के पहलौठे से लेकर दासी के पहलौठे तक उसने सबको घात किया। उसी तरह, न्याय के दिन, परमेश्वर बिना भेदभाव दिखाए, सबको दण्ड देगा: वे सभी लोग जिन्होंने उसका तिरस्कार किया है उसके सम्मुख से हटा दिए जाएंगे, चाहे वे इस संसार में बड़ा व्यक्ति ही क्यों न रहे हों या फिर नीच ही क्यों न रहे हों। चाहे धर्मी या सुप्रसिद्ध लोग, यदि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा को नहीं माना तो वे भी परमेश्वर के अनुग्रह के भागी नहीं होंगे। और न ही परमेश्वर दरिद्रों पर उनके दरिद्र होने के कारण दया दिखायेगा।

"कुत्ता भी नहीं भौंकेगा" (11:7)

निर्गमन 11:7 कहता है, "पर इस्राएलियों के विरुद्ध, क्या मनुष्य क्या पशु,

किसी पर कोई कुत्ता भी न भोंकेगा।" दसवें विपत्ति के द्वारा मिस्री परिवार तबाह होने जा रहा था, इसके द्वारा पहलौठों की मृत्यु होने जा रही है। मूसा ने कहा, "सारे मिस्र देश में बड़ा हाहाकार मचेगा, यहां तक कि उसके समान न तो कभी हुआ और न होगा" (11:6)। जब यह सब कुछ हो रहा होगा तो इस्राएली लोग छोड़ दिए जाएंगे; उन पर तो कुत्ता भी नहीं भौंकेगा। 6 और 7 आयत का दूसरा अनुवाद REB के द्वारा समझा जा सकता है, जो यह कहता है, "पूरे मिस्र में बड़ा विलाप होगा ... परंतु इस्राएलियों के बीच न तो मनुष्यों और न जानवरों की आवाज सुनाई देगी, यहाँ तक कि कुत्ता भी नहीं भौंकेगा। इस प्रकार तुम जान लोगे कि यहोवा मिस्र और इस्राएल के बीच अन्तर करता है।"

मुख्य विषय स्पष्ट है: "यहोवा मिस्र और इस्राएल के बीच अन्तर करता है।" यद्यपि, यह केवल दसवें विपत्ति के संदर्भ में ही नहीं था कि यहोवा ने मिस्र और इस्राएल के बीच भेद किया था। पहलौठों की मृत्यु के साथ-साथ (11:7; 12:13), इस्राएल के लोग डांसो की झुंड के विपत्ति (8:21-23), जानवरों पर आए विपत्ति (9:4), ओलों की विपत्ति (9:26), अंधेरे की विपत्ति (10:23) से भी प्रभावित नहीं हुए।

परमेश्वर ने इस्राएल को छोड़ देने के द्वारा फ़िरौन को यह दिखा दिया कि इस्राएल परमेश्वर के लोग थे और क्योंकि उनका इतना सामर्थशाली परमेश्वर है तो फ़िरौन को उन्हें जाने देना चाहिए था। इस घटना ने इस्राएल के प्रति परमेश्वर का प्रेम और उनके प्रति उसके चिंता को भी प्रमाणित कर दिया था। क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें छोड़ दिया था, इस कारण "कुत्ता भी उन पर नहीं भौंका," इस कारण उन्हें ऐसा लगा होगा कि वे "विशिष्ट" लोग हैं। वस्तुतः, वे विशिष्ठ लोग थे - वे इतने विशिष्ठ थे कि परमेश्वर ने "मिस्र और इस्राएल के बीच अन्तर किया।"

परमेश्वर ने अपने और दूसरे लोगों के बीच अन्तर किया। पुराने नियम में परमेश्वर, इस्राएल और दूसरे लोगों के बीच अन्तर करता रहा। उसने इस्राएल से यह प्रतिज्ञा की कि यदि वे उसके आज्ञा मानेंगे तो वह उन्हें विशेष आशीष प्रदान करेगा (लैव्य. 26; व्यव. 27; 28)। परमेश्वर ने अपने उन प्रतिज्ञाओं को उन्हें मरुस्थल के यात्रा के दौरान भोजन और पानी देकर, जय देकर (उदाहरण, कनान पर विजय), और शत्रुओं से उनकी रक्षा कर, पूरा किया (देखें 2 राजा 19:35-37)।

परंतु, परमेश्वर ने इस्राएल को इन विशेषाधिकार, जिनका उन्होंने आनंद उठाया था, के लिए जिम्मेदार भी ठहराया; इन विशेषाधिकार के साथ-साथ उन्हें बड़ी जिम्मेदारियां भी दी गई थी। यदि इन लोगों ने इन विशेषाधिकारों पर घमण्ड किया लेकिन इसके साथ मिले जिम्मेदारियों के अनुसार जीवन यापन नहीं किया (यिर्मयाह के दिनों के समान [यिर्म. 7]), तो वे श्रापित ठहरते। अंततः, ऐसा ही हुआ। परिणामस्वरूप, उत्तरी राज्य (इस्राएल) और दक्षिणी राज्य यहूदा दोनों नाश किए गए। फिर भी, जिन्होंने पुराने नियम में इस्राएल का सामना किया था, निस्संदेह उनके साथ परमेश्वर ने उसका चुना इस्राएल का अन्य देशों के साथ अन्तर किया।

आज भी परमेश्वर अपने चुने हुए लोग एवं अन्य लोगों में अन्तर करता है।

परमेश्वर उन लोगों के बीच अन्तर करता है कि उन्होंने उद्धार कैसे प्राप्त किया है (प्रेरितों. 10:34, 35), लेकिन क्या वह ऐसा दूसरे तरीके से करता है? क्या मसीही लोगों को परमेश्वर की यह प्रतिज्ञा है कि "कुत्ता भी हम पर नहीं भौंकेगा" जबकि सारा संसार पीड़ा से कराह रहा है? क्या मसीही लोग परमेश्वर द्वारा आशीषित, स्थिर जीवन, उन नुकसानों से सुरक्षित, जिसे संसार के दूसरे लोग अनुभव कर रहे हैं, की अपेक्षा कर सकते हैं?

हम चाहते हैं कि काश ऐसा ही हो। पुराने नियम और नये नियम के अनुच्छेद ऐसे प्रतीत होते हैं मानो जो लोग परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं, उनके लिए सम्पन्नता और अच्छे स्वास्थ्य की प्रतिज्ञा करता है। कुछ व्याख्याकर्ता इन अनुच्छेदों की व्याख्या इस प्रकार करते हैं कि अविश्वासी लोग जिन दुःखों का अनुभव करते हैं वैसे अनुभव मसीही लोग कभी नहीं करेंगे। कुछ प्रचारक ऐसा ही करते हैं, वे "स्वास्थ्य और धन" वाली सुसमाचार सुनाते हैं। परंतु हमारा अनुभव यह सिखाता है कि आज भी परमेश्वर के लोग महाविपदा और पीड़ा, जिसे आम लोग अनुभव करते हैं, से विमुक्त नहीं किए गए हैं। यदि हम पवित्रशास्त्र का ध्यान से अवलोकन करें तो हमें मिलेगा कि न तो पुराने नियम में और न ही नये नियम में विश्वासियों को "स्वास्थ्य और धन" की प्रतिज्ञा दी गई है। धर्मी अय्यूब ने दुःख उठाया। यदि सिद्ध मनुष्य यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया, यदि आदि मसीही शहीद हुए, यदि मसीह का अनुकरण करने का परिणाम सताव है (मरकुस 10:29-31), तो हम मुसीबतों और पीड़ा से छुटने की क्यों अपेक्षा करते हैं?

परमेश्वर अपने और दूसरे लोगों में अन्तर करता है लेकिन जो आशीष वह देता है वे आत्मिक हैं। आज हम भी इस्राएल के समान "एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा" हैं (1 पतरस 2:9)। कलीसिया उद्धार पाए हुए लोगों का समूह है (प्रेरितों. 2:47; देखें 1 कुरि. 12:13; इफि. 5:23)। मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और उसके लिए अपनी जान दी (इफि. 5:23-25)। कोई भी समूह इस प्रकार का दावा नहीं कर सकता है! सचमुच, आज भी परमेश्वर "अन्तर" करता है: कोई भी व्यक्ति विशेष उद्धार पाने के द्वारा कलीसिया में है या फिर यदि वह कलीसिया नहीं है तो उसका उद्धार नहीं हुआ है।

जो लोग कलीसिया में हैं उनके लिए परमेश्वर सुरक्षा, परीक्षा के समय सहायता, उनके प्रार्थनाओं का उत्तर, लगातार क्षमादान और अन्य प्रकार की आशीष की प्रतिज्ञा करता है। चूँकि हम मसीही हैं तो इसलिए परमेश्वर हमें दुःखों का अनुभव करने से अलग नहीं रखता है बल्कि वह तो सदैव हमारी सहायता और हमें सांत्वना देने के लिए तैयार रहता है। वह दुःख की घड़ी में अपने अनुयायियों को नहीं छोड़ता है।

उसके आशीषों के साथ ही जिम्मेदारियां भी जुड़ी हुई हैं (1 पतरस 2:9, 10)। हम जिम्मेदारियां भूलकर केवल आशीषों का ही आनंद नहीं उठा सकते हैं या लगातार जिम्मेदारियां उठाए बिना हम आशीष पाने की अपेक्षा नहीं कर सकते हैं।

परमेश्वर ने अपने लोगों को सुरक्षा प्रदान करने का उदाहरण यह कह कर प्रस्तुत किया है कि जब पूरा मिस्र कराह रहा होगा तो उन पर "कुत्ता भी नहीं भौंक" रहा था। मसीही लोग भी उसी प्रकार की सुरक्षा का भरोसा कर सकते हैं: अनंतकाल तक - स्वर्ग के बाहर, उस महा खाई में - रोना और दांतों का पीसना होगा। फिर भी, स्वर्गीय नगर के अंदर, वहाँ "इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी" (प्रका. 21:4)। जो इस नगर में होंगे उन्हें कुत्ते का भौंकना भी परेशान नहीं करेगा। यदि आप कलीसिया में हैं, तो यह नगर आपका अंतिम पड़ाव है।

फ़िरौन: एक आत्मा का क्षय (11:9, 10)

वारेन डब्ल्यू. विअर्सबे ने विपत्ति पर लिखे गए एक किताब के एक अध्याय में फ़िरौन की "नैतिक और आत्मिक क्षय" पर अपना ध्यान केंद्रित किया है। उसने अंतिम सात विपत्तियों पर फ़िरौन के प्रत्युत्तर पर ध्यान केंद्रित किया है: (1) "सौदा करना" (8:20-32); (2) "सामना करना" (9:1-12); (3) "धोखा देना" (9:13-35); (4) "निवेदन करना" (10:1-20); और (5) "धमकी देना" (10:21-29)। तब उसने कहा,

> फ़िरौन का हृदय कठोर करना हम सबके लिए एक चेतावनी है। यदि पापी मानवीय हृदय विश्वास से परमेश्वर के वचन के प्रति प्रत्युत्तर नहीं करता है, तो यह परमेश्वर के अनुग्रह से भी नहीं बदला जा सकता है (यहेज. 36:26-27; इब्रा. 8:7-13)। बल्कि यह परमेश्वर की सच्चाई का तिरस्कार करने से कठोर से कठोरतम होता जाता है।[13]

परमेश्वर ने हमें जो करने के लिए कहा है उस पर ध्यान करना चाहिए (इब्रा. 3:7, 8; 10:31)।

समाप्ति नोट्स

[1]जेम्स बर्टन कॉफमैन, *कॉमेन्ट्री ऑन एक्सोडस, द सेकेंड बुक ऑफ मोसेस* (एबिलीन, टेक्सस: एसीयू प्रैस, 1985), 130; डब्ल्यू. एच. गिस्पेन, *एक्सोडस*, ट्रांस. एड वैन डेर मास, बाइबल स्टूडेंट्स कॉमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: रीजेंसी रेफेरेंस लाइब्रेरी, जौन्डवैन पबलिशिंग हाउस, 1982), 111. [2]देखें *द एक्स्पोजिटर्स बाइबल कॉमेन्ट्री,* वॉल. 2, *जेनेसिस-नम्बर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौन्डवैन, 1990), 369 वॉल्टर सी. कैसर, जूनियर, *"एक्सोडस।"* [3]उमबर्टो कस्सुटो, *ए कॉमेन्ट्री ऑन द बुक ऑफ एक्सोडस,* ट्रांस. इस्राएल अब्राहम्स (जेरुसलेम: मैगनेस प्रैस, 1997), 131-32. [4]मिस्रियों के बहुमूल्य वस्तुओं की "चोरी" से संबंधित मतों का संक्षिप्तीकरण जौन आई. डर्हम, *एक्सोडस*, वर्ड बिबलिकल कॉमेन्ट्री, वोल. 3 (वैको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1987), 148 में दिया गया है। [5]यह विचार आर. एलेन कोल की *एक्सोडस: एन इंट्रोडक्शन एण्ड कॉमेन्ट्री*, टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेंट कॉमेन्ट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1973), 102 में निहित है। [6]जे. फिलिप ह्यात, *एक्सोडस,* द न्यू सेंचुरी बाइबल कमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1971), 130. [7]नहूम एम. सारना, *एक्प्लोरिंग एक्सोडसः दि ओरिजिंस आफ बिब्लिकल इस्राएल* (न्यू यॉर्कः शोकेन बुक्स, 1996), 94. [8]कार्ल जी. रासमुस्सेन, "मील,

मीलस्टोन," *न्यू इंटरनेशनल स्टेंडर्ड बाइबल एनसाइक्लोपीडीया*, संशोधित संस्करण, सम्पादक ज्योफरी डब्ल्यु. ब्रोमिली (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1986), 3:355. देखें प्राचीन साम्राज्य की मिस्री नमूना की चित्र (c. 2700-2200 ई.पू.), जेम्स बी. प्रिचार्ड, *दि एनसिंट नियर ईस्ट इनपिक्चर्स रेलेटिंग टू दि ओल्ड टेस्टामेंट* (प्रिंस्टन, न्यू जर्सी: प्रिंस्टन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1954), 46 (no. 149)। [9]कोल, 103. [10]दुरहैम, 149.

[11]विल्बर फील्ड्स, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडस,* बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज (जॉपलीन, मैसाचुसेट्स: कॉलेज प्रेस, 1976), 231. [12]चार बार 11:4, 8 में "जाने के लिए" एक ही इब्रानी शब्द יָצָא *(यात्सा)* प्रयोग किया गया है। 10:28 में "चला जा" के लिए दूसरा शब्द הָלַךְ *(हालाक)* प्रयोग किया गया है। [13]वारेन डब्ल्यू. वीयर्सबी, *बी डेलिवर्ड* (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडोः विक्टर, 1998), 35-47.